



Himanshi

04 Oct 1999

09:47 AM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 119645201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 04/10/1999
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 09:47:00 घंटे
इष्ट _____: 08:48:49 घटी
स्थान _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 09:25:52 घंटे
वेलान्तर _____: 00:11:05 घंटे
साम्पातिक काल _____: 10:15:33 घंटे
सूर्योदय _____: 06:15:28 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:04:13 घंटे
दिनमान _____: 11:48:45 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 16:38:59 कन्या
लग्न के अंश _____: 01:28:28 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: पुष्य - 3
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: सिद्ध
करण _____: विष्टि
गण _____: देव
योनि _____: मेष
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: मेष
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: हो-होशियार
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1921	आश्विन	12
पंजाबी	संवत : 2056	आश्विन	18
बंगाली	सन् : 1406	आश्विन	17
तमिल	संवत : 2056	पुरुटासी	18
केरल	कोल्लम : 1175	कन्नी	18
नेपाली	संवत : 2056	आश्विन	18
चैत्रादि	संवत : 2056	आश्विन	कृष्ण 10
कार्तिकादि	संवत : 2056	भाद्रपद	कृष्ण 10

पंचांग

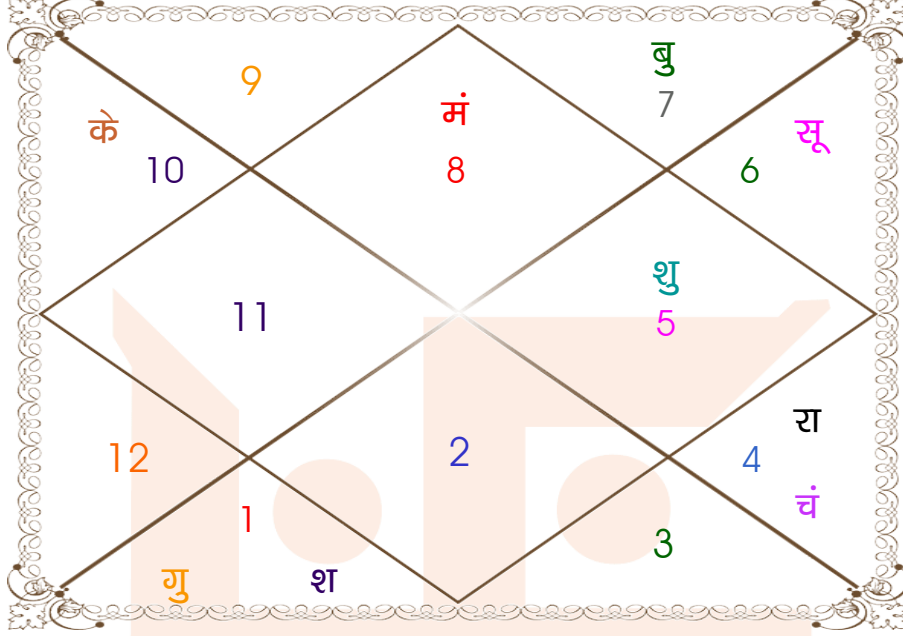
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 10
तिथि समाप्ति काल _____ : 17:48:33
जन्म तिथि _____ : 10
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पुष्य
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 17:15:19 घंटे
जन्म योग _____ : पुष्य
सूर्योदय कालीन योग _____ : सिद्ध
योग समाप्ति काल _____ : 27:49:32 घंटे
जन्म योग _____ : सिद्ध
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 06:22:40 घंटे
जन्म करण _____ : विष्टि
भयात _____ : 39:58:45
भभोग _____ : 58:39:33
भोग्य दशा काल _____ : शनि 6 वर्ष 0 मा 7 दि

घात चक्र

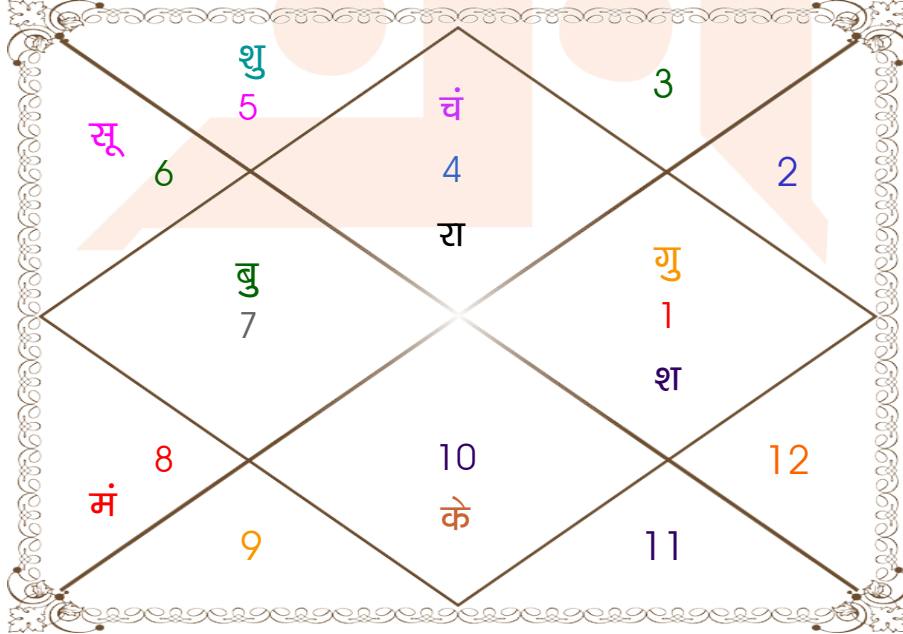
मास _____ : पौष
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : बुधवार
नक्षत्र _____ : अनुराधा
योग _____ : व्याघात
करण _____ : नाग
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : श्वान
लग्न _____ : तुला
सूर्य _____ : सिंह
चन्द्र _____ : सिंह
मंगल _____ : कन्या
बुध _____ : मिथुन
गुरु _____ : तुला
शुक्र _____ : वृश्चिक
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	श गु		
			रा चं
के			शु
	मं ल	बु	सू

लग्न कुंडली

	श गु		
रा चं			के
शु			
सू	बु	ल मं	

विंशोत्तरी
शनि 6वर्ष 0मा 7दि
शनि

04/10/1999

12/10/2106

शनि	11/10/2005
बुध	11/10/2022
केतु	11/10/2029
शुक्र	11/10/2049
सूर्य	11/10/2055
चन्द्र	11/10/2065
मंगल	11/10/2072
राहु	11/10/2090
गुरु	12/10/2106

योगिनी
धान्या 0वर्ष 11मा 12दि
संकटा

16/09/2022

16/09/2030

संकटा	26/06/2024
मंगला	15/09/2024
पिंगला	24/02/2025
धान्या	26/10/2025
भ्रामरी	16/09/2026
भद्रिका	26/10/2027
उल्का	24/02/2029
सिद्धा	16/09/2030

Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

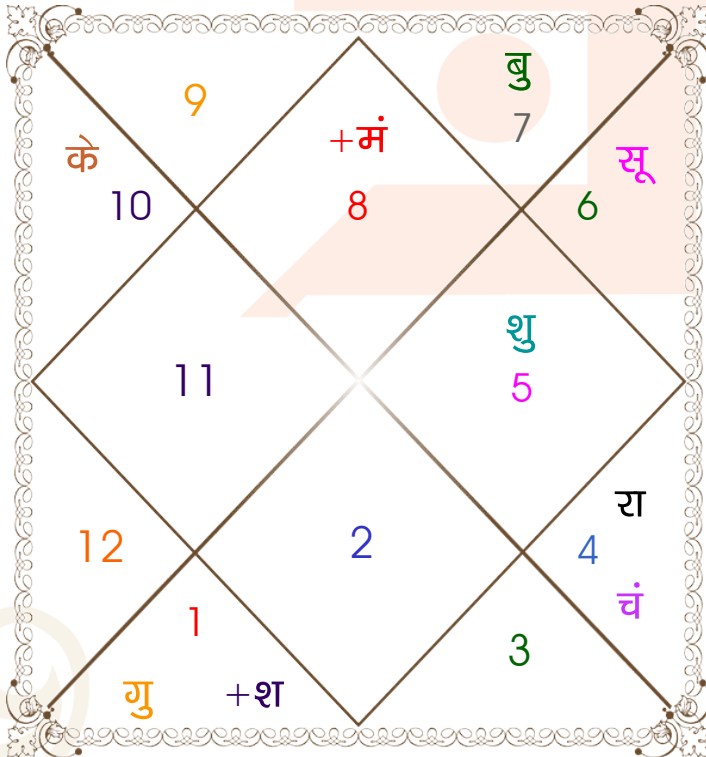
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	01:28:28	306:48:00	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	---
सूर्य			कन्या	16:38:59	00:59:05	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	सम राशि
चंद्र			कर्क	12:26:31	13:36:04	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	मंगल	स्वराशि
मंगल			वृश्चि	26:59:43	00:41:55	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	गुरु	स्वराशि
बुध			तुला	04:37:16	01:28:48	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	मित्र राशि
गुरु	व		मेष	08:36:40	00:07:00	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	मित्र राशि
शुक्र			सिंह	03:39:52	00:40:24	मघा	2	10	सूर्य	केतु	सूर्य	शत्रु राशि
शनि	व		मेष	22:16:44	00:03:26	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	नीच राशि
राहु			कर्क	17:27:41	00:00:25	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	बुध	शत्रु राशि
केतु			मक	17:27:41	00:00:25	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	शनि	शत्रु राशि
हर्ष	व		मक	19:09:46	00:00:56	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	---
नेप	व		मक	07:45:54	00:00:20	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
प्लूटो			वृश्चि	14:27:51	00:01:27	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	---
दशम भाव			सिंह	08:02:03	--	मघा	--	10	सूर्य	केतु	गुरु	--

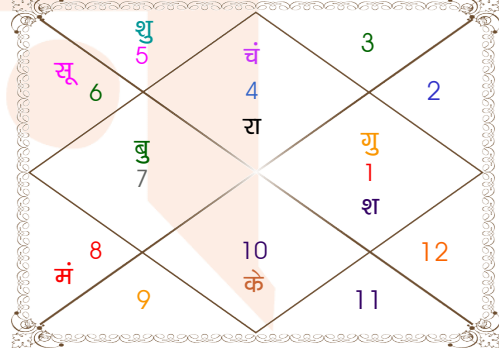
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:50:59

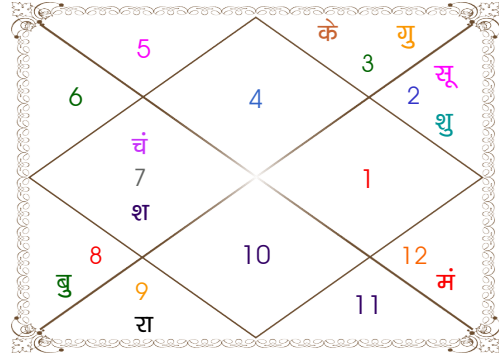
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	तुला 17:34:04	वृश्चिक 01:28:28
2	वृश्चिक 17:34:04	धनु 03:39:39
3	धनु 19:45:15	मकर 05:50:51
4	मकर 21:56:27	कुम्भ 08:02:03
5	कुम्भ 21:56:27	मीन 05:50:51
6	मीन 19:45:15	मेष 03:39:39
7	मेष 17:34:04	वृष 01:28:28
8	वृष 17:34:04	मिथुन 03:39:39
9	मिथुन 19:45:15	कर्क 05:50:51
10	कर्क 21:56:27	सिंह 08:02:03
11	सिंह 21:56:27	कन्या 05:50:51
12	कन्या 19:45:15	तुला 03:39:39

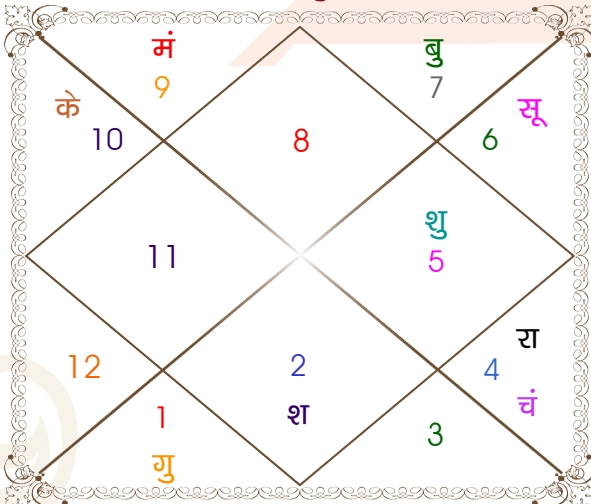
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	01:28:28
2	धनु	01:21:59
3	मकर	03:59:59
4	कुम्भ	08:02:03
5	मीन	10:04:28
6	मेष	07:44:13
7	वृष	01:28:28
8	मिथुन	01:21:59
9	कर्क	03:59:59
10	सिंह	08:02:03
11	कन्या	10:04:28
12	तुला	07:44:13

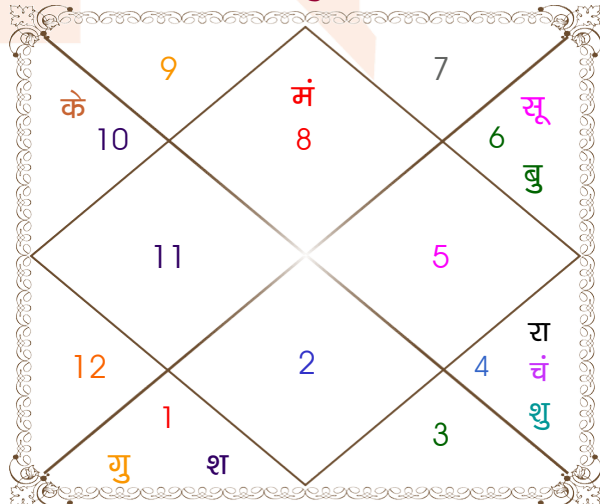
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 6 वर्ष 0 मास 7 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
04/10/1999	11/10/2005	11/10/2022	11/10/2029	11/10/2049
11/10/2005	11/10/2022	11/10/2029	11/10/2049	11/10/2055
00/00/0000	बुध 08/03/2008	केतु 09/03/2023	शुक्र 09/02/2033	सूर्य 28/01/2050
00/00/0000	केतु 06/03/2009	शुक्र 08/05/2024	सूर्य 10/02/2034	चंद्र 30/07/2050
00/00/0000	शुक्र 05/01/2012	सूर्य 13/09/2024	चंद्र 11/10/2035	मंगल 05/12/2050
00/00/0000	सूर्य 10/11/2012	चंद्र 14/04/2025	मंगल 10/12/2036	राहु 30/10/2051
00/00/0000	चंद्र 11/04/2014	मंगल 10/09/2025	राहु 11/12/2039	गुरु 17/08/2052
04/10/1999	मंगल 09/04/2015	राहु 29/09/2026	गुरु 11/08/2042	शनि 30/07/2053
मंगल 24/05/2000	राहु 26/10/2017	गुरु 05/09/2027	शनि 11/10/2045	बुध 05/06/2054
राहु 30/03/2003	गुरु 01/02/2020	शनि 14/10/2028	बुध 11/08/2048	केतु 11/10/2054
गुरु 11/10/2005	शनि 11/10/2022	बुध 11/10/2029	केतु 11/10/2049	शुक्र 11/10/2055

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
11/10/2055	11/10/2065	11/10/2072	11/10/2090	12/10/2106
11/10/2065	11/10/2072	11/10/2090	12/10/2106	00/00/0000
चंद्र 11/08/2056	मंगल 09/03/2066	राहु 24/06/2075	गुरु 28/11/2092	शनि 15/10/2109
मंगल 12/03/2057	राहु 27/03/2067	गुरु 16/11/2077	शनि 12/06/2095	बुध 24/06/2112
राहु 11/09/2058	गुरु 02/03/2068	शनि 22/09/2080	बुध 16/09/2097	केतु 03/08/2113
गुरु 11/01/2060	शनि 11/04/2069	बुध 12/04/2083	केतु 23/08/2098	शुक्र 02/10/2116
शनि 11/08/2061	बुध 08/04/2070	केतु 29/04/2084	शुक्र 24/04/2101	सूर्य 14/09/2117
बुध 10/01/2063	केतु 05/09/2070	शुक्र 30/04/2087	सूर्य 11/02/2102	चंद्र 16/04/2119
केतु 11/08/2063	शुक्र 05/11/2071	सूर्य 24/03/2088	चंद्र 13/06/2103	मंगल 05/10/2119
शुक्र 11/04/2065	सूर्य 11/03/2072	चंद्र 23/09/2089	मंगल 18/05/2104	00/00/0000
सूर्य 11/10/2065	चंद्र 11/10/2072	मंगल 11/10/2090	राहु 12/10/2106	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भूभाग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 6 वर्ष 0 मा 18 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु 10/09/2025 29/09/2026	केतु - गुरु 29/09/2026 05/09/2027	केतु - शनि 05/09/2027 14/10/2028	केतु - बुध 14/10/2028 11/10/2029	शुक्र - शुक्र 11/10/2029 09/02/2033
राहु 07/11/2025 गुरु 28/12/2025 शनि 27/02/2026 बुध 22/04/2026 केतु 14/05/2026 शुक्र 17/07/2026 सूर्य 06/08/2026 चंद्र 06/09/2026 मंगल 29/09/2026	गुरु 13/11/2026 शनि 06/01/2027 बुध 24/02/2027 केतु 15/03/2027 शुक्र 11/05/2027 सूर्य 28/05/2027 चंद्र 26/06/2027 मंगल 16/07/2027 राहु 05/09/2027	शनि 08/11/2027 बुध 04/01/2028 केतु 28/01/2028 शुक्र 04/04/2028 सूर्य 25/04/2028 चंद्र 28/05/2028 मंगल 21/06/2028 राहु 21/08/2028 गुरु 14/10/2028	बुध 04/12/2028 केतु 25/12/2028 शुक्र 23/02/2029 सूर्य 13/03/2029 चंद्र 13/04/2029 मंगल 04/05/2029 राहु 27/06/2029 गुरु 14/08/2029 शनि 11/10/2029	शुक्र 02/05/2030 सूर्य 02/07/2030 चंद्र 11/10/2030 मंगल 21/12/2030 राहु 22/06/2031 गुरु 01/12/2031 शनि 11/06/2032 बुध 30/11/2032 केतु 09/02/2033
शुक्र - सूर्य 09/02/2033 10/02/2034	शुक्र - चंद्र 10/02/2034 11/10/2035	शुक्र - मंगल 11/10/2035 10/12/2036	शुक्र - राहु 10/12/2036 11/12/2039	शुक्र - गुरु 11/12/2039 11/08/2042
सूर्य 28/02/2033 चंद्र 30/03/2033 मंगल 20/04/2033 राहु 14/06/2033 गुरु 02/08/2033 शनि 29/09/2033 बुध 19/11/2033 केतु 11/12/2033 शुक्र 10/02/2034	चंद्र 01/04/2034 मंगल 07/05/2034 राहु 06/08/2034 गुरु 26/10/2034 शनि 31/01/2035 बुध 27/04/2035 केतु 01/06/2035 शुक्र 11/09/2035 सूर्य 11/10/2035	मंगल 05/11/2035 राहु 08/01/2036 गुरु 05/03/2036 शनि 11/05/2036 बुध 11/07/2036 केतु 05/08/2036 शुक्र 15/10/2036 सूर्य 05/11/2036 चंद्र 10/12/2036	राहु 24/05/2037 गुरु 17/10/2037 शनि 08/04/2038 बुध 11/09/2038 केतु 14/11/2038 शुक्र 15/05/2039 सूर्य 09/07/2039 चंद्र 08/10/2039 मंगल 11/12/2039	गुरु 19/04/2040 शनि 20/09/2040 बुध 05/02/2041 केतु 03/04/2041 शुक्र 12/09/2041 सूर्य 31/10/2041 चंद्र 20/01/2042 मंगल 18/03/2042 राहु 11/08/2042
शुक्र - शनि 11/08/2042 11/10/2045	शुक्र - बुध 11/10/2045 11/08/2048	शुक्र - केतु 11/08/2048 11/10/2049	सूर्य - सूर्य 11/10/2049 28/01/2050	सूर्य - चंद्र 28/01/2050 30/07/2050
शनि 10/02/2043 बुध 24/07/2043 केतु 30/09/2043 शुक्र 09/04/2044 सूर्य 06/06/2044 चंद्र 11/09/2044 मंगल 17/11/2044 राहु 10/05/2045 गुरु 11/10/2045	बुध 06/03/2046 केतु 06/05/2046 शुक्र 25/10/2046 सूर्य 16/12/2046 चंद्र 12/03/2047 मंगल 12/05/2047 राहु 14/10/2047 गुरु 29/02/2048 शनि 11/08/2048	केतु 05/09/2048 शुक्र 15/11/2048 सूर्य 06/12/2048 चंद्र 10/01/2049 मंगल 04/02/2049 राहु 09/04/2049 गुरु 05/06/2049 शनि 11/08/2049 बुध 11/10/2049	सूर्य 16/10/2049 चंद्र 25/10/2049 मंगल 01/11/2049 राहु 17/11/2049 गुरु 02/12/2049 शनि 19/12/2049 बुध 04/01/2050 केतु 10/01/2050 शुक्र 28/01/2050	चंद्र 13/02/2050 मंगल 23/02/2050 राहु 23/03/2050 गुरु 16/04/2050 शनि 15/05/2050 बुध 10/06/2050 केतु 20/06/2050 शुक्र 21/07/2050 सूर्य 30/07/2050

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

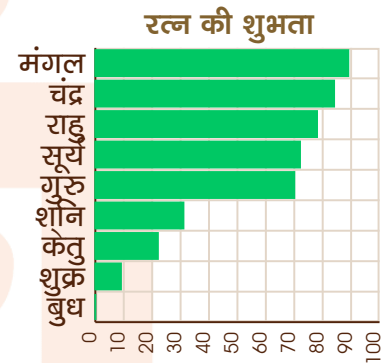
मूलांक	4
भाग्यांक	6
मित्र अंक	1, 4, 6
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	89%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
मोती	चंद्र	84%	भाग्योदय
गोमेद	राहु	78%	भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	72%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	70%	शत्रु व रोग मुक्ति, धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	31%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि, ग्रह कलेश
लहसुनिया	केतु	22%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
हीरा	शुक्र	9%	व्यावसायिक हानि, दाम्पत्य कष्ट, व्यय
पन्ना	बुध	0%	व्यय, दुर्घटना, हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	11/10/2005	59%	72%	76%	0%	70%	22%	53%	84%	0%
बुध	11/10/2022	78%	72%	89%	3%	70%	22%	31%	78%	22%
केतु	11/10/2029	59%	72%	95%	0%	70%	22%	6%	66%	47%
शुक्र	11/10/2049	59%	72%	89%	0%	70%	34%	44%	84%	34%
सूर्य	11/10/2055	84%	90%	95%	0%	77%	0%	6%	66%	0%
चंद्र	11/10/2065	78%	97%	89%	0%	70%	9%	31%	66%	0%
मंगल	11/10/2072	78%	90%	100%	0%	77%	9%	31%	66%	34%
राहु	11/10/2090	59%	72%	76%	0%	70%	22%	44%	91%	0%
गुरु	12/10/2106	78%	90%	95%	0%	83%	0%	31%	78%	22%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
सम
सम
सम
शुभ

क्षेत्र

दुर्घटना से बचाव
बदनामी
व्यावसायिक परेशानी
कम खर्च
सुख

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण

और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील, धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरे से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आधिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान्, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

सिंह राशि में शुक हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- केतु
(11/10/2022 - 11/10/2029)**

केतु की महादशा 11/10/2022 को आरम्भ और 11/10/2029 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु तृतीय भाव में स्थित है। केतु की दृष्टि नवम भाव पर है। इसके पहले आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको जीवन का सुख, सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा सफलता और संबंधियों से सहायता मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आप में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की भावना उत्पन्न होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको पित्तदोष, फोड़ा-फुन्सी, विषाणुजन्य संक्रामक रोग, गले से संबंधित बीमारी आदि हो सकती है। कुछ सतर्कता से इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपकी स्व-अर्जित सम्पत्ति होगी। आपकी आय में वृद्धि होगी और सभी सुख मिलेगा। आपको सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा और निवेश लाभदायक रहेगा। जीविका के लिये दवा, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, सरकारी सेवा, लोक प्रशासन, सैन्य तथा राजनीतिक सेवा, तकनीकी विज्ञान, पेशेवर खेल आदि का चयन कर सकते हैं। चमड़े के सामान, सोना रत्न, संगमरमर, अनाज आदि का व्यापार लाभदायक रहेगा। नौकरी पेशा लोगों को यश, ख्याति, आय में वृद्धि तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। सहकर्मी तथा सहायक से सहायता मिलेगी और वरिष्ठ कर्मचारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को कुछ बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है किन्तु उनमें बाधाओं पर विजय पाने का संकल्प है। दशा में प्रगति के साथ-साथ स्थिति में सुधार होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सुख मिलेगा। आप अपना आवास बदल सकते हैं। आप एक नयी गाड़ी खरीद सकते हैं। जमीन-जायदाद के लेन-देन सावधानी से करें ताकि छोटे-मोटे नुकसानों को रोका जा सके। सूर्य की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा होगी। इसकी पूरी दशा में आपकी छोटी यात्रा होगी। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान दूर की यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप वाद-विवाद, कला-प्रदर्शन और खेल में बहुत सफल होंगे। आप परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में अच्छा करेंगे। दवा, कम्प्यूटर, भूगर्भ-शास्त्र, प्रशासनिक सेवा, कला, दर्शनशास्त्र आदि में आपकी रुचि होगी। आप दृढ़निश्चय और एकाग्रचित्त हैं और अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चे धनवान होंगे, उनके लक्ष्यों की पूर्ति होगी और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा और समृद्धि की प्राप्ति होगी और धार्मिक कार्यों की ओर उनका झुकाव होगा। आपके पिता को साझेदारों से लाभ मिलेगा, उनकी यात्रा होगी और व्यापार में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को यश, ख्याति और सम्पत्ति मिलेगी जबकि बड़े भाई-बहनों को सट्टे में लाभ, उत्तम शिक्षा और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सफलता और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुक्र के फलस्वरूप आपको आराम, सुख और उत्तम शिक्षा की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्रा होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सगे संबंधियों से सहायता मिलेगी जबकि चन्द्र की दशा में लाभ और पारिवारिक आनन्द मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान स्वास्थ्य के खराब होने, विरोध और सम्पत्ति-लाभ की सम्भावना है। राहु के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपका विवाह होगा, जीविका में प्रगति और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा में कुछ परिवर्तन, पिता से लाभ, यात्रा और अध्यात्म में रुचि होगी। बुध की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपके पिता को साझेदारों से लाभ मिलेगा, उनकी यात्रा होगी और व्यापार में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को यश, ख्याति और सम्पत्ति मिलेगी जबकि बड़े भाई-बहनों को सट्टे में लाभ, उत्तम शिक्षा और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

**अंतर्दशा :- केतु - चन्द्र
(13/09/2024 - 14/04/2025)**

आपके लिए केतु महादशा 11/10/2022 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 13/09/2024 से प्रारंभ होकर 14/04/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आप दान-धर्म के काम करेंगे। समाजसेवी संस्था की स्थापना कर सकते हैं। आपकी संतान सुखकारी होगी। दूरस्थ स्थान की लाभदायक यात्रा हो सकती है। घर में मेहमान आ सकते हैं। आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। छोटे भाई-बहनों से उत्तम संबंध रहेंगे। कला, संगीत और साहित्य में सफलता मिल सकती है।

आपके जीवनसाथी को संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। आपके पिता लोकप्रिय और समाज में सफल होंगे। माता के मार्ग में बाधाएं आ सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, उत्तम शिक्षा, बहुत से मित्र और धनी बनने का संकेत है।

आपकी संतान सफल होगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और स्पर्धा में सफल रहेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो घरेलू जीवन सुखी रहेगा, धनी बनेंगे, निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भूतकाल की साख से लाभ होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के कार्यक्षेत्र में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं; खर्च बढ़ेंगे। व्यापारियों को कुशल मार्केटिंग से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गठिया आदि व्याधि से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

ॐ सौं सोमाय नमः

**अंतर्दशा :- केतु - मंगल
(14/04/2025 - 10/09/2025)**

आपके लिए केतु की महादशा 11/10/2022 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 14/04/2025 को प्रारंभ होकर 10/09/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लक्ष्य प्राप्ति में सफल रहेंगे। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है मगर आप कूटनीति द्वारा बचाव कर सकते हैं। व्यापार द्वारा लाभ में वृद्धि होगी; व्यापार से संबंधित यात्राएं हो सकती हैं। शारीरिक क्षमता और ऊर्जा उत्तम होंगी। विरासत और जीवनसाथी के धन द्वारा लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा; व्यापार या साझेदारी में कुछ तनाव हो सकता है। आपके पिता को निवेश से लाभ होगा। माता सफल रहेंगी, उनकी तीर्थयात्रा हो

सकती है, निवेश से लाभ होगा, उत्साह पर्याप्त रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए स्पर्धियों पर विजय, धन, उत्तम स्वास्थ्य, सफलता और प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान अगर कार्यरत है तो प्रसिद्ध होगी, कार्यों में सफलता मिलेगी, पिता से लाभ होगा, यात्रा हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो अचानक लाभ हो सकता है; सहकर्मियों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को पहले की साख और निवेश से लाभ होगा। व्यापारियों की आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा, मगर अत्यधिक परिश्रम से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल मसूर, लाल वस्त्र और लाल चंदन का दान करें।

अंतर्दशा :- केतु - राहु (10/09/2025 - 29/09/2026)

आपके लिए केतु महादशा 11/10/2022 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 10/09/2025 को प्रारंभ होकर 29/09/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आपको सांसारिक सुख उपलब्ध रहेंगे। शिक्षा द्वारा प्रसिद्धि मिलेगी। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। सब कार्य बाधाओं के बावजूद पूर्ण हो जाएंगे। भाग्य साथ देगा। यात्रा, लेखन और प्रकाशन से लाभ हो सकता है। भाइयों के साथ मधुर संबंध रहेंगे। समाज और व्यापार में सम्मान बढ़ेगा।

आपके जीवनसाथी सब कार्यों में दृढ़निश्चय का परिचय देंगे। आपके पिता के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

माता को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, कार्यालय उत्तम होगा। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, आर्थिक प्रगति के अवसर और व्यापार में विस्तार का संकेत है। आपकी संतान परीक्षा में सफल होगी, शिक्षा संपूर्ण होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा, रोजगार मिलेगा, संतान से सुख मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, पहले की साख द्वारा उन्नति होगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को स्पर्धा में सफलता मिलेगी।

अंतर्दशा :- केतु - गुरु (29/09/2026 - 05/09/2027)

आपके लिए केतु महादशा 11/10/2022 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 29/09/2026 को प्रारंभ होकर 05/09/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का

कारक है।

इस अवधि में आपकी शत्रुओं पर विजय होगी। स्पर्धियों पर सफल रहेंगे। कार्यालय उत्तम होगा। चुनाव में जीत सकते हैं। मुकदमे में जीत होगी। कर्ज से मुक्ति मिलेगी। कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, धनी बनेंगे। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी। आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके पिता कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे। माता की बौद्धिक उन्नति होगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचल संपत्ति की प्राप्ति, उत्तम शिक्षा, परिवर्तन और अप्रत्याशित लाभ का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धन संचित करेंगे, प्रसन्न और भाग्यशाली होंगे, सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा, मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- केतु - शनि
(05/09/2027 - 14/10/2028)

आपके लिए केतु महादशा 11/10/2022 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 05/09/2027 को प्रारंभ होकर 14/10/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आप शत्रुओं पर विजयी होंगे। स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी। अधीनस्थ कर्मचारी प्रसन्न रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम होगा। कार्यक्षेत्र में प्रोन्नति होगी या जिम्मेदारियां बढ़ेंगी। उच्चाधिकारियों से संघर्ष के बाद उन्नति होगी। मामा पक्ष के लोगों से लाभ होगा। लक्ष्य प्राप्ति के लिए उत्साह बना रहेगा।

आपके जीवनसाथी की यात्रा हो सकती है; खर्चे बढ़ेंगे।

आपके पिता सफल और प्रसिद्ध होंगे। माता की लघु यात्राएं हो सकती हैं, उत्साह में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, अचल संपत्ति का क्रय, कुछ परिवर्तन और अचानक लाभ का संकेत है।

आपकी संतान की आय बढ़ेगी, घरेलू सुख रहेगा, सुख-साधन उपलब्ध होंगे।

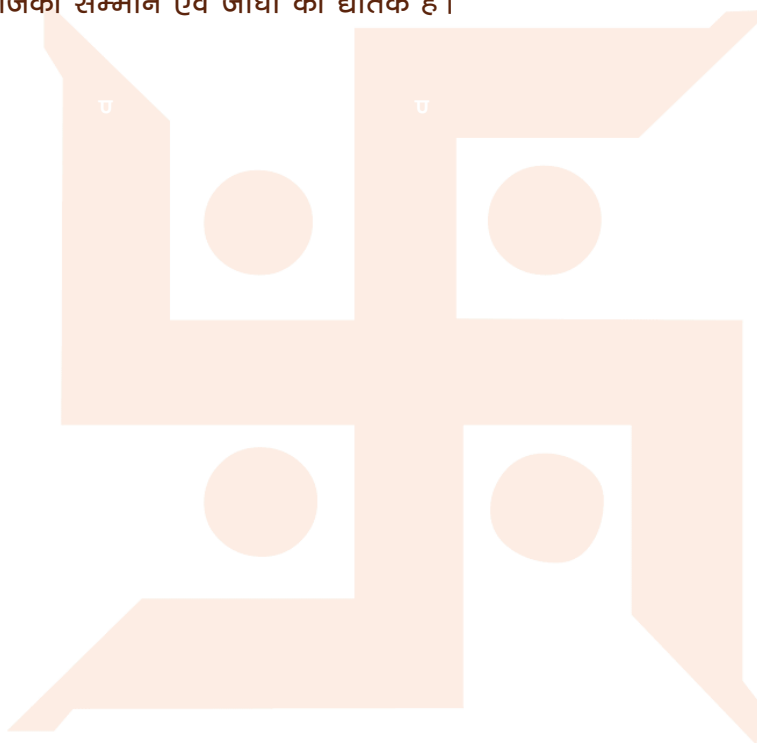
अगर आप सेवारत हैं तो सफल होंगे, आय बढ़ेगी, कार्यालय उत्तम रहेगा। परामर्शदाता भाग्यशाली होंगे। व्यापारियों को धनहानि हो सकती है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए मछलियों को आटे की गोली

**महादशा :- शुक्र
(11/10/2029 - 11/10/2049)**

शुक्र की महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 11/10/2029 को आरंभ और 11/10/2049 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र दशम भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है और अच्छे स्वाद, संगीत, नाटक, ऐंद्रिय सुखों का द्योतक है। यह दो राशियों वृष तथा तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में नीच का तथा मीन में उच्च का होता है। यह विवाह का कारक भी है। आपकी जन्मकुण्डली में दशम भाव में स्थित शुक्र की चतुर्थ भाव पर दृष्टि है और इस भाव पर उसका शुभ प्रभाव पड़ रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् दशम् भाव सम्मान, प्रतिष्ठा, नाम और यश, सफलता और प्रतिष्ठा, ख्याति, लक्ष्य अधिकार, कर्तव्य, पदोन्नति, आधुनिकता, उच्च पद तथा राजकी सम्मान एवं जाँघों का द्योतक है।



स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र दशम् भाव में स्थित है जहां से यह आपकी जन्मकुण्डली के चतुर्थ भाव, जो परिवार का भाव और सुख स्थान है, को, एक केन्द्र से दूसरे केन्द्र तक देखता है। इसके फलस्वरूप आपकी इस दशा काल में कोई स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और आप सभी तरह का पारिवारिक आनन्द उठाएँगे।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र जीवनचर्या तथा व्यवसाय के दशम भाव में स्थित है, जो आपको इस दशा काल में चल तथा अचल सम्पत्ति अर्जित करने के अनेक अवसर प्रदान करेगा। आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में अच्छी स्थिति के कारण सम्मान प्राप्त करेंगे तथा शुक्र की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने के कारण आपको नया घर तथा वाहन प्राप्त होने की संभावना है।

व्यवसाय :

आप जो कोई भी व्यवसाय अपनाएँगे उसमें सफल होंगे। आपको आदर और प्रतिष्ठा मिलेगी। आप सुखी और तेज होंगे और आपको व्यवसाय के सिलसिले में यात्रा से लाभ होगा। आपके भाई-बहन आपकी सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

अपने व्यवसाय तथा नौकरी के प्रति समर्पित होने के कारण आप अपने जीवन साथी का अनजाने में तिरस्कार करेंगे जिससे आपके परिवार में दरार पैदा हो सकती है और घरेलू जीवन बरबाद हो सकता है।

**अंतर्दशा :- शुक्र - शुक्र
(11/10/2029 - 09/02/2033)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 11/10/2029 को प्रारंभ होकर 11/10/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 11/10/2029 को प्रारंभ होकर 09/02/2033 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका समाज में उच्च स्थान होगा और प्रभाव बढ़ेगा, प्रसिद्धि मिलेगी। कई महिलाएं आपके अधीनस्थ कार्य कर सकती हैं या आप महिलाओं से संबंधित व्यवसाय जैसे सौंदर्य-प्रसाधन, बुटीक, आदि से संबद्ध हो सकते हैं। कोई दैवी शक्ति भी प्राप्त कर सकते हैं जिसका इस्तेमाल आप सावधानीपूर्वक करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।
- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली रोटी गाय को खिलाएं।